International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 23-01-2019; Accepted: 26-02-2019
www.educationjournal.org
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 52-55

विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की शिक्षा का आधुनिकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

Dr. Monika Jain
Principal, Modern Education Society Teacher Traning College, Jaipur, Rajasthan, India

सारांश
उद्धेश्य : प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को शिक्षा किस प्रकार वैश्विक आधुनिकता की ओर ले जा रही है, जिसमें परानुभूति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कपूर्ण उद्धेश्य, धर्म निरपेक्षता, सामाजिक परिवर्तन, एवं उच्च स्तरीय प्रोद्योगिकी आदि क्षेत्रों में क्या शिक्षा विद्यार्थियों के विचारों एवं व्यवहारों में परिवर्तन ला रही है का अध्ययन किया गया है।
परिकल्पना : उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में आधुनिकता स्तर को सार्थक रूप से प्रभावित करती है, जिसमें सामान्य एवं व्यवसायिक पाठ्यक्रम, तथा लैंगिक आधार पर एवं जातिगत स्तर में आधुनिकता का अंतर एवं समानता को अध्ययन में देखा गया है।
अध्ययन कार्य प्रणाली : अध्ययन में न्यादर्श का चयन स्तरीक्रत विधि द्वारा जयपुर जिले के विभिन्न विषयों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्क्रमों के 20–20 प्रतिशत विद्यार्थियों का चयन कर प्रदत्त संकलन किया गया। आधुनिकता स्तर की जानकारी के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया एवं स्वयं निर्मित प्रश्नावली द्वारा अध्ययन के आंकडे एकत्र किये गये। अध्ययन की जांच हेतु समान्तर मध्य, प्रमाप विचलन एवं टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है।
विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि शिक्षा आधुनिकता के स्तर को प्रभावित करती है जिसमें शिक्षा का स्तर एवं जातिगत स्तर शिक्षा को प्रभावित कर रहा है, परंतु लैगिक अंतर शिक्षा पर हावी होता हुआ नहीं पाया गया।

मूल शब्द : आधुनिकता, परानुभूति, प्रौद्योगिकी, सामाजिक परिवर्तन।

प्रस्तावना
आधुनिकता एक विवादास्पद अवधारणा है। इसका अविर्भाव 17 वीं शताब्दी में हुआ, पर इसमें गति 19 वीं शताब्दी के अंत और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद आई। आधुनिकता जीवन की संभावनाओं और दिशा का सूचक, एक विशिष्ट दृष्टिकोंण है। जिसके अनुसार सत्य, सौन्दर्य और नैतिकता वस्तुपरक यतार्थताएं है जिनहें तार्किक एवं वैज्ञानिक विधियों से जाना और समझा जा सकता है तथा जिनकी खोज संभव है। सामाजिक जीवन का यह दृष्टिकोण प्रगति को न केवल अपरिहार्य मानता है, अपितु उन साधनों को भी इंगित करता है, जिनके द्वारा मानवीय दशाओं पर अधिकाधिक नियंत्रण तथा व्यक्ति के लिए अधिकाधिक स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है।
सोचने–समझने और व्यवहार करने के ऐसे तौर–तरीकों को सामान्यतः आधुनिकता कहा जाता है जिसमें प्रगति की आकांक्षा, विकास की आशा और परिवर्तन के अनुरूप अपने आपको ढालने का भाव निहित होता है। यह ऐसी संभावनाओं के द्वार खोलने के प्रति विश्वास करने वाली एक धारणा है जो इस बात पर बल देती है कि बौद्धिक एवं तार्किक विश्व के माध्यम से सामाजिक प्रगति हसिल की जा सकती है। आधुनिकता बुद्धिवादी बनने, अंधविश्वास से बाहर निकलने, नैतिकता में उदारता बरतने की एक प्रक्रिया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता की विशेषताओं में वैश्विक आधुनिकता के विचार को रखा है जैसे परानुभूति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अमूर्तिकरण, भविष्योनमुखता, धर्मनिरपेक्षता, सार्वभौमिक दृष्टिकोण, प्रौद्योगिकी, वैयक्तिकता, मुक्ति उन्नत आदि से है। आधुनिक व्यक्ति वह है जो विचार और सहानुभूति के परम्परागत तरीके त्याग दे, जिसका मस्तिषक नये विचारों को स्वीकार करने के लिए खुला हो, विवेकशील और धर्मनिरपेक्ष हो तथा जो समानता, न्याय व स्वतंत्रता में विश्वास रखता हो। आधुनिकता का केन्द्रीय संदर्भ तर्क और विवेक होता है इसमें संवेगों और भावुकता का कोई स्थान नहीं होता। आधुनिकता में मानवता निहित होती है। यह सही है कि आधुनिकता तकनीकी तंत्र को बढावा देती है, लेकिन जब यह मानव केन्द्रित नहीं होती इसके अस्तित्व का कोई मतलब नहीं है। आधुनिकता का बुनियादी तत्व सार्वभौमिक सांस्कृतिक है जिसमें प्रजातंत्र, समानता, धर्मनिरपेक्षता आदि आधुनिक मूल्य है। आधुनिकता किसी पद या स्थिति को अभिव्यक्त नहीं करती वरन् एक प्रक्रिया को अभिव्यक्त करती है। आधुनिकता कोई दर्शन या आंदोलन नहीं है, यह तो परिवर्तन की एक प्रक्रिया है इसमें आधुनिक बनने की संकल्पना निहित है जो स्थिर समाजों की अपेक्षा गतिशील समाजों में अधिक पाई जाती है। गतिशील समाज का अभिप्राय जनतांत्रिक समाजों से है जिनका आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक विकास वैज्ञानिक विधियों पर आधारित है। आधुनिकता की व्यापकता उसमें निहित वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण में है। वैश्वीकरण ही उदारीकरण और निजीकरण को प्रोत्साहित करता है।
आधुनिकता की व्याख्या सबसे अधिक समाजशास्त्रिय विचारकों ने की है। दुर्खिम के अनुसार आधुनिकता बढता हुआ स्तरीकरण है, वेबर के अनुसार विवेक या बुद्धि संगतता।
कुछ वर्षो से विद्धानों ने अधुनिकता को व्यवहार के साथ रखा है। इसका प्रारंभ एलेंक्स इन्केल्स से है।
योगेन्द्र सिंह (1972) ने आधुनिकता को मूल्यों की गठरी माना है जो सम्पूर्ण मानवीय व्यवहार को निर्धारित करती है। अमेरिका तथा यूरोप में आधुनिकता पूजीवाद और औद्योगीकरण के कारण आया, इसी के साथ ही विवेकपूर्ण व्यवहार भी आया।
एम. एन. श्रीवास्तव ने भारत में आधुनिकता की उपस्थिति ब्रिटिश काल से मानी है। उन्होंने कहा ब्रिटिशकाल में हमारे देश में जो आधुनिकता आई, उसमें विवेक यानी बुद्धिसंगतता तथा मानवतावाद पर्याप्त मात्रा में थे। जिनके परिणामस्वरूप विज्ञान तकनीकी तंत्र और शिक्षण संस्थाओं का उदय हुआ। मेकाले द्वारा प्रस्तावित अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया। अंग्रेजी शिक्षा ने उदार विचारधारा को जन्म दिया।

शिक्षा भारत में आधुनिकता लाने में सर्वाधिक प्रभावशाली उपकरण है। जिसके फलस्वरूप राष्ट्रवाद, उदारवाद एवं स्वतंत्रता हेतु लोगो की आकांक्षाओं का संक्रियकरण हुआ है। यह एक प्रबुद्ध बुद्धिजीवी वर्ग के विकास के लिये उत्तरदायी है, जिसने न केवल स्वतंत्रता के लिये एक आंदोलन चलाया, अपितु सामाजिक सांस्कृतिक सुधारों के लिए अथक संघर्ष किया। शिक्षा ने विद्यार्थियों की एक उपसंस्कृति को जन्म दिया, जो कि पूरी तरह आधुनिक तो नहीं है परंतु उसमें परम्परा से आधुनिकता की ओर संक्रमण के तत्व है। शैक्षणिक व्यवस्था ने स्कूल, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों की शक्ल में तार्किक रूप से संगठित रूप से संरचनाओं के नये स्वरूपों को विकास के माध्यम से आधुनिकता में योगदान दिया है, जो कि ज्ञान तथा उन सांस्कृतिक संवर्गों के प्रसार हेतु परिवेश में आधुनिक है। सांस्कृतिक जाल का काम करते हैं भारत सरकार द्वारा नियुक्त शिक्षा आयोग 1964–1966 की रिपोर्ट का निम्नलिखित कथन – शिक्षा एवं आधुनिकता के क्षेत्र में अच्छा उदाहरण है। आधुनिकता की प्रक्रिया में सर्वाधिक शक्तिशाली उपकरण विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित शिक्षा है। विज्ञान के वर्तमान युग का एक महान सबक यह है कि समृद्धि किसी भी राष्ट्र की पहुॅच में है जिसमें कठोर परिश्रम का संकल्प और इच्छा है तथा जिसकी एक स्थायी और प्रगतिशील सरकार है। इसमें कोई संदेह नही है कि आने वाले वर्षो में भारत को व्यापार और वाणिज्य बढेगा, सभी के लिये और अधिक शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य और एक समुचित जीवन स्तर उपलब्ध होगा। परंतु इन भौतिक उपलब्धियों के लिए भारत का योगदान और अधिक हो सकता है और होना चाहिये। उसे विज्ञान के दोहन को सीखना होगा कि वह विज्ञान का गुलाम ना हो जाये।

आधुनिकता का आशय पश्चिमीकरण नहीं है अपितु वह व्यक्ति मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करती है। यूरोप में औद्योगिक क्रांति से व्यक्तियों में ज्ञानोदय हो गया था इसनें विज्ञान के क्षेत्र में क्रांति ला दी जिससे उदार विचारधारा का सूत्रपात हुआ। अब धर्म को लोग संदेह की दृष्टि से देखने लगे। विश्वास का स्थान तर्क ने ले लिया वैज्ञानिक क्रांति ने लोगों के विचार करने के ढंग को ही बदल दिया। इस वैज्ञानिक क्रांति को ही आधुनिकता का जनक समझा जाता है।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षा मानव विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। व्यक्ति को आधुनिक बनाने में शिक्षा का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा विद्यार्थी को मूल्य, संस्कृति एवं आदर्शो से परिचित कराती है। तथा समयानुसार उनमें परिवर्तन लाने के लिए अभिप्रेरित करती है। शिक्षा ही विद्यार्थियों के विचारों में परिवर्तन लाने का माध्यम है। शिक्षा के द्वारा ही समाज में परिवर्तन संभव है। वर्तमान में तीव्र परिवर्तन शिक्षा के कारण ही आये हैं, शिक्षा की भूमिका को जब इतना अधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है तो प्रश्न यह उठता है कि

क्या उच्च शिक्षा हमारे यहां आधुनिकता को विकसित कर पा रही है

क्या उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद युवा वर्ग के दृष्टिकोण, मूल्यो व विश्वासों में अत्यधिक परिवर्तन आ रहे है ?

क्या शिक्षा का स्तर एवं शिक्षा पाठ्यक्रम आधुनिकता को प्रभावित करते है ?

क्या स्त्री एवं पुरूष दोनों शिक्षा के द्वारा समान रूप से आधुनिक बन रहे है ?

क्या शैक्षणिक पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की आधुनिकता को प्रभावित करते है ?

क्या ये सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिए तैयार है ?

समस्या कथन

उपरोक्त समस्त प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिये व इन तथ्यों को समझने के लिए शोध की आवश्यक्ता अनुभव की व शोधहेतु समस्या अभिकथन इस प्रकार नामांकित किया –''विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नात्कोत्तर विद्यार्थियों की शिक्षा का आधुनिकता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन के उद्धेश्य

1. उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर (अध्यापक शिक्षा, प्रबंधन, अभियांत्रिकी एवं सामान्य पाठ्यक्रम) के विद्यार्थियों की आधुनिकता के स्तर का पता लगाना व तुलना करना।
2. उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की आधुनिकता की तुलना करना।
3. सामान्य एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की आधुनिकता की तुलना करना।
4. उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की आधुनिकता में लैंगिक अंतरों की जानकारी प्राप्त करना।
5. उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की आधुनिकता स्तर में जातिगत अंतर का पता लगाना।

परिकल्पनाएं

प्रस्तावित शोध की परिकल्पनाएं निम्न है–

1. उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर (अध्यापक शिक्षा, प्रबंधन, अभियांत्रिकी एवं सामान्य पाठ्यक्रम) विद्यार्थियों में आधुनिकता स्तर को शिक्षा सार्थक रूप से प्रभावित करती है।
2. उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की आधुनिकता के स्तर में सार्थक अंतर पाया जाता है।
3. सामान्य एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की आधुनिकता स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
4. उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की आधुनिकता में लैंगिक आधार पर सार्थक अंतर पाया जाता है।
5. उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में आधुनिकता स्तर में जातिगत अंतर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श

न्यादर्श का चयन स्तरीकृत न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया है। प्रस्तावित अध्ययन में जयपुर जिले मे अध्ययनरत विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर (अभियांत्रिक, प्रबंधन, अध्यापक शिक्षा एवं सामान्य पाठ्यक्रम) के बीस प्रतिशत विद्यार्थियों का स्तरीकृत न्यादर्श विधि द्वारा चयन कर प्रदत्त संकलन किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण – प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की आधुनिकता की जानकारी हेतु सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई है। आधुनिकता स्तर की जानकारी हेतु आधुनिकता से संबंधित प्रश्नावली निर्मित की गई एवं प्रमापीकरण भी की गई है जिसमें निम्न घटक लिये गये है – परानुभूति (दूसरों की स्थिती में स्वयं को देखना) मानसिक गत्यात्मकता, उच्च सहभागिता, लक्ष्यों की स्पष्टता, लक्ष्यों का एकीकरण, संस्थागत राजनैतिक प्रतियोगिता, उपलब्धि अभिप्रेरणा, तर्कपूर्ण उद्धेश्य और साधन का आंकलन, धर्म निरपेक्षता, नूतन दृष्टिकोण, परिवर्तन की वांछनीयता और संभावना में विश्वास, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अनुशासन, उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी।

अध्याय में समान्तर मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रांतिक अनुपात का उपयोग किया गया है।

शोध के निष्कर्ष

1. उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में आधुनिकता को शिक्षा सार्थक रूप मे प्रभावित करती है। संबंधी निष्कर्ष निम्न भागों में प्रस्तुत है–
   - स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की आधुनिकता सम्बंधी निष्कर्ष
   - व्यवसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की आधुनिकता स्तर सम्बंधी निष्कर्ष

स्नातकोत्तर स्तर पर आधुनिकता का प्रतिशत स्नातक स्तर से अधिक रहा है अतः कहा जा सकता है कि शैक्षिक वृद्धि के फलस्वरूप शिक्षा आधुनिकता को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में अभियांत्रिकी, प्रबंधन एवं अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों में उच्च स्तर की आधुनिकता का प्रतिशत अधिक रहा है परंतु अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों का प्रतिशत अभियांत्रिकी एवं प्रबंधक विद्यार्थियों से 12.50 प्रतिशत कम रहा है अतः व्यवसायिक पाठ्यक्रम भी आधुनिकता को प्रभावित करता है।

परिकल्पना 2

उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियो की आधुनिकता के स्तर में सार्थक अंतर पाया जाता है।

आधुनिकता में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। शिक्षा की उपरी पायदानों पर चढने से कौशलों एवं योग्यताओं में तो वृद्धि होती है परंतु आधुनिकता समान रूप से पाई जाती है परंतु कला संकाय में यह अंतर पाया गया है। विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थी समान रूप से आधुनिकता को प्रभावित करते है। यही अंतर अध्यापक शिक्षा के स्नातक एवं स्नात्कोत्तर विद्यार्थियों में पाया गया है।

आधुनिकता के घटकों के संबंध में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर अंतर मानसिक गत्यात्मकता, राजनैतिक प्रतियोगिता उच्च सहभागिता, नूतन दृष्टिकोण में परिवर्तन पाया गया है अतः यह घटक शिक्षा में उच्च स्तर को प्रभावित करते है।

परानुभूति, लक्ष्यों की स्पष्टता, लक्ष्यों का एकत्रीकरण, उपलब्धि अभिप्रेरणा, धर्मनिरपेक्षता, तर्कपूर्ण उद्धेश्य सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक अनुशासन, उच्च स्तरीय प्रोद्योगिकी घटकों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में समानता पाई गई है शिक्षा आधुनिकता की ओर ले जाने में सक्षम है।

परिकल्पना 3

सामान्य एवं व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की आधुनिकता स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

- सामान्य एवं व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की आधुनिकता के घटक सम्बंधी अंतर के निष्कर्ष।
- सामान्य एवं व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की आधुनिकता सम्बंधी अंतर के निष्कर्ष।

सामान्य एवं व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में आधुनिकता संबंधी अंतर नहीं पाया जाता है सामान्य यह धारणा प्रचलित है कि व्यवसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थी अधिक आधुनिक होते है। प्रस्तुत अध्ययन में यह अन्तर नहीं पाया गया है। घटकों के सम्बन्ध मे परानुभूति, मानसिक गत्यात्मकता, उच्च सहभागिता, लक्ष्यों का एकत्रीकरण, संस्थागत राजनैतिक प्रतियोगिता, उपलब्धि अभिप्रेरणा, तर्कपूर्ण उद्धेश्य और साधनों का आंकलन, धर्मनिरपेक्षता, बचत और जोखिम उठाने के प्रति नूतन दृष्टिकोण, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अनुशासन सम्बन्धी उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी में अन्तर नहीं पाया जाता है परंतु घटकों के सम्बंध में लक्ष्यों की एवं परिवर्तन की वाछनीयता और संभावना में आधुनिकता में अंतर पाया गया। इन घटकों में सामान्य पाठ्यक्रम के विद्यार्थी कम रूचिकर पाये गये। सामान्य एवं व्यवसायिक पाठ्यक्रम में इन घटकों में अंतर पाया गया है, उसे शैक्षिक परिवेश द्वारा कम किया जाना आवश्यक है। लक्ष्यों व विद्यार्थियों में परिवर्तन को स्वीकार करने हेतु शिक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाना होगा।

परिकल्पना 4

उच्च शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की आधुनिकता में लैंगिक आधार पर सार्थक अंतर पाया जाता है।

प्रायः विभिन्न मुद्दों को लेकर यह पूर्वाग्रह देखने को मिलता है कि छात्रों एवं छात्राओं में आधुनिकता के संदर्भ में अंतर पाया जाता है परंतु प्रस्तुत अध्ययन में यह पूर्वाग्रह प्रमाणित नहीं हुआ है। छात्र एवं छात्राएं समान रूप से आधुनिकता की ओर बढ रहे है। शिक्षा उनको आधुनिक बनाने के रूप में प्रभावित कर रही है। सम्पूर्ण परिपेक्ष में संकायों के आधार पर एवं व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों में आधुनिकता के घटकों के संदर्भ में परानुभूति, मानसिक गत्यात्मकता, उच्च सहभागिता, लक्ष्यों की स्पष्टता, लक्ष्यों का एकत्रीकरण, तर्कपूर्ण उद्धेश्य, धर्मनिर्पेक्षता, नूतन दृष्टिकोण परिवर्तन वांछनीयता सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अनुशासन, उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी में लैगिक अंतर नहीं पाया गया परंतु संस्थागत राजनीतिक प्रतियोगिता व उपलब्धि अभिप्रेरणा में लैंगिक अंतर पाया गया। महिला वर्ग का रूझान राजनीति में नही पाया गया एवं वे सामान्य कार्यो तथा साधारण उपलब्धियों से संतुष्ट पाई गई।

परिकल्पना 5

उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे स्नातक एवं स्नात्कोत्तर विद्यार्थियों में आधुनिकता स्तर में जातिगत अंतर नहीं पाया जाता है।

विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के सामान्य एवं वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के आधुनिकता में अंतर पाया गया। सामान्य वर्ग के विद्यार्थी आधुनिकता की दौड में आगे है अतः यह पाया गया है कि सामान्य एवं वंचित वर्ग के विद्यार्थियों में शिक्षा का प्रभाव सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुसार पडता है। शिक्षा द्वारा आधुनिकता के स्तर में वृद्धि करने हेतु प्रयास करने चाहिये। परंतु शोध परीक्षण द्वारा अलग अलग संकायों के आधार पर आधुनिकता की जॉच की गई तो यह अंतर नहीं पाया गया। इस आधार पर शिक्षा किसी न किसी रूप में आधुनिकता को प्रभावित करती है।

आधुनिकता के घटकों के संबंध में समग्र रूप से परानुभूति, मानसिक गत्यात्मकता, उच्च सहभागिता, लक्ष्यों की स्पष्टता, लक्ष्यों का एकत्रीकरण, संस्थागत राजनैतिक प्रतियोगिता परिवर्तन की वांछनीयता में जातिगत अंतर पाया गया है।

इन घटकों में वंचित वर्ग के विद्यार्थी कम आधुनिक पाये गये दूसरे शब्दो में कहा जा सकता है कि शिक्षा के साथ सामाजिक तत्व भी आधुनिकता को प्रभावित करते है। विद्यार्थी की क्रियाओं में सामाजिक पृष्ठभूमि भी अपना योगदान देती है। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम इस बात के द्योतक है।

परंतु आधुनिकता के कुछ घटकों में उपलब्धि अभिप्रेरणा, धर्म निरपेक्षता, जोखिम उठाने के प्रति नूतन दृष्टिकोण सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अनुशासन व उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी संबंधी आधुनिकता में अन्तर नहीं पाया गया अतः शिक्षा किसी न किसी रूप में आधुनिकता लाने में सभी वर्गों को प्रभावित कर रही है। जो घटक प्रभावित नहीं कर पा रहे हैं उन्हें शिक्षा के द्वारा दूर करने का प्रयास करना चाहिये।

शैक्षिक उपादेयता

शिक्षा व आधुनिकता में घनिष्ठ संबंध होता है। शिक्षा के अभाव में आधुनिकता को वास्तविक व सर्वव्यापी नहीं बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से शिक्षा आधुनिकता के साथ स्वतः जुड जाती है। आधुनिकता के लक्ष्यों को प्राप्त करने मे शिक्षा एक प्रभावशाली साधन के रूप में है। आधुनिकता के नवीन आयाम विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों उनकी मानसिकता में परिवर्तन ला रहे है किन्तु क्या दबाव सही दिशा में हो रहा है इस हेतु पाठ्यक्रम व अधिगम अनुभवों को अधिक समृद्ध एवं दृढ करना चाहिये। शिक्षा आधुनिता के स्तर में लैंगिक दूरियां कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

आधुनिकता के कुछ घटकों मे जातिगत अंतर पाया गया इन घटकों के संदर्भ में शिक्षा की अभिवृद्धि में सुधार करके जातिगत अंतर को कम किया जा सकता है। शिक्षा वास्तविक व समिक्षात्मक रूप में आधुनिकता की आवश्यकता है। इसे स्वीकृत या अस्वीकृत करने के प्रति सही दृष्टिकोण का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. Gupta, Dipankar, *Mistaken Modernity*, Harper Collins Publishers, New Delhi, 2000.
2. McGuigan Jim, *Modernity and Postmodern Culture*, Open University press, Philadelphia, 1999.
3. Stuart Hall, David Held and Tony McGrew, (eds), *Modernity and its Futures*, Blackwell Publishers, Oxford, 1992.
4. Singh, Yogendra, *Modernisation of Indian Tradition*, Rawat Publications, Jaipur, 1994.
5. Arjun, Appudurai, *Modernity and cultural dimention of Globalization*. Blackwell Publication, Oxford, New Delhi, 1977.
6. A.Touraina, *Critique of Modernity Trans*, David Macery, Blackwell Publishers, Oxford, 1993.
7. Gopal, Guru, *Dalit in Pursuit of Modernity*.Rawat Publication, 2000.
8. Y.K.Gupta, *Personality Factors And Attitude Towards Modernity of Secondary School Teaching and Teachers.* N.C.E.R.T, New Delhi, 1998.
9. Ulrich, Beck. *Risk Society: Towards a New Modernity*.Sage Publishers, London, 1992.
10. S.L.Sharma, *Role of Education in India Modernization.*Rawat Publications, Jaipur, 1998.
11. S.R.Toshniwal, *Modernizatin Among the college Students of Vidarbha Region: A Survey*, NCERT, New Delhi, 1991.
12. S.S.Singh, *Indian Journal of Public Administration, vol.II, No. 2, April-june,* Rawat Publication, Jaipur.2004.
13. Y.C.Chang, *Fostering Local Knowledge and Human Development in Globalization of Education, International Journal of Education Management, vol-18,* Sage Publishers, New Delhi, 2001.